

नद्यावर्तक पुं. (तत्.) फलित ज्योतिष में यात्रा का एक शुभ योग जिसमें शत्रुओं का सहज नाश होता है।

नधना अ.क्रि. (तत्.) 1. बैल, घोड़े आदि को रस्सी से गाड़ी या हल से बांधना जिसे उन्हें खींचकर ले जाना हो, जोतना, नाधना 2. जुड़ना, संबद्ध होना 3. किसी कार्य का अनुष्ठित होना, ठन लेना मुहा. काम में नधना- काम में लगना।

नधाव पुं. (देश.) सिंचाई के लिए पानी ऊपर चढ़ाने में ऊपर उलीचने के लिए बने गड़ढो में से सब से निचला गड़ढा।

ननंद स्त्री. (तद्.) पति की बहन, ननद, ननदी, ननदिया।

ननकारना अ.क्रि. (देश.) नकारना या अस्वीकार करने की क्रिया, इंकार करना, नकारना।

ननकारी स्त्री. (तत्.) नकारने की क्रिया, नकार, इंकार, अस्वीकार, नामंजूरी।

ननकारू पुं. (देश.) नकारने का भाव।

ननदोई पुं. (तद्.) ननद का पति, पति का बहनोई।

ननसार/ननसाल पुं. (देश.) नाना का घर, ननिहाल।

ननिअउरा पुं. (तत्.) दे. ननसार

ननिहारी स्त्री. (देश.) एक प्रकार की ईंट।

ननीतक पुं. (तत्.) 1. घी, घृत 2. मक्खन।

ननु अव्य. (तत्.) अव्यय- कुछ पूछने, संदेह प्रकट करने या वाक्य के प्रारंभ में व्यवहृत होने वाला शब्द।

ननुआ वि. (तद्.) सुंदर, सुलोचना।

ननुनच क्रि.वि. (तत्.) कभी हों और कभी न करना, आनाकानी।

ननोई पुं. (देश.) बिना जोते बोए वर्षा के जलाशयों में स्वयं पैदा होने वाला जंगली धान, वसही।

नन्हा वि. (तद्.) बहुत छोटा।

नन्हाई स्त्री. (देश.) 1. छोटापन, छोटाई 2. बदनामी, अप्रतिष्ठा, हेठी।

नन्हिया पुं. (देश.) 1. एक प्रकार का धान या उसका चावल।

नपकालिका स्त्री. (तत्.) 1. नवयौवना (स्त्री.) नौजवान औरत 2. हाल ही में रजस्वला हुई युवती।

नपता पुं. (देश.) एक पक्षी जिसके पंखों पर काली या लाल चित्तियाँ होती हैं।

नपना अ.क्रि. (तत्.) नप जाना, नापने का काम होना।

नपरका पुं. (देश.) एक तरह का पक्षी जिसकी गरदन और पेट लाल और पैर तथा चोंच पीले रंग की होती हैं।

नपाई स्त्री. (देश.) नापने की मजदूरी।

नपाक वि. (फा.) अपवित्र, अशुद्ध।

नपात पुं. (तत्.) देवयान-पथ।

नपुंसक पुं. (तत्.) 1. कामेच्छा से रहित पुरुष, इलाज या उपाय से जाग्रत 2. क्लीब, हिजड़ा, नामर्द 3. कायर, डरपोक 4. संस्कृत व्याकरण में एक लिंग।

नपुंसकता स्त्री. (तत्.) 1. नपुंसक होने का भाव, हिजड़ापन 2. एक रोग जिसमें मनुष्य का वीर्य नष्ट हो जाए और वह स्त्री संभोग के अयोग्य हो जाए, नामर्दी।

नपुंसक मंत्र पुं. (तत्.) जैनियों के अनुसार वह मंत्र जिसके अंत में 'नम' हो।

नपुंसक वेद पुं. (तत्.) जैन विश्वास के एक प्रकार का मोहनीय वर्ग जिसके उदय से स्त्री के साथ भी संभोग की इच्छा होती है और बालक या पुरुष के साथ भी यही इच्छा होती है।

नपुआ पुं. (हि.) नापने का पात्र, बर्तन जिसमें रखकर कोई वस्तु नापें, माप, मापदंड।